# अध्याय चतुर्थ

## प्रदत्तों का परिणाम विश्लेषण एवं व्याख्या

## अध्याय – चतुर्थ

## परिणाम, विश्लेषण और व्याख्या

इस अध्ययन में शोध से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण परिणामों की व्याख्या और विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है तथा निष्कर्षों का दूसरे उपलब्ध अध्ययनों के आकार पर तुलना भी किया गया है, सभी परीक्षणों को स्नातक तथा स्नातकोत्तर के अध्यापकों पर क्रियान्वित किया गया है और उनसे प्राप्त हुए कुल प्रदत्तों की गणना कर प्राप्त आँकड़ों को तालिकाबद्ध कर प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम नवाचारिक अध्ययन मापनी को 40 महाविद्यालय के 500 अध्यापकों के ऊपर प्रशासित किया गया और उनसे प्राप्त प्रदत्तों को सारिणी संख्या 4.1 में दर्शाया गया है निम्न तालिका को देखने से पता चलता है कि प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्त में कुल अध्यापकों की संख्या 500 है, जिसमें से नवाचारिक अध्यापकों की संख्या 68 तथा अनवाचारिक अध्यापकों की संख्या 82 है ।

तालिका संख्या – 4.1

नवाचारिक और अनवाचारिक अध्यापकों की संख्या, मध्य और मानक विचलन

| | अध्यापक संख्या = 500 | | |
|---|---|---|---|
| | नवाचारिक | अनवाचारिक | सी.आर.मान |
| माध्य | 5.17 | 4.09 | |
| मानक विचलन | 2.50 | 2.33 | 2.71 |
| संख्या | 68 | 82 | |

.05 स्तर पर सार्थक ।

नवाचारिक अध्यापकों का नवाचारिक अध्यापक मापनी प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 5.17 और मानक विचलन 2.50 है और अनवाचारिक अध्यापकों का माध्य 4.09 तथा मानक विचलन 2.33 है । इनका सी.आर. मान 2.71 पाया गया, जो .05 स्तर पर सार्थक है ।

तालिका संख्या – 4.2

क्षेत्र और लिंग के आधार पर समस्त चरों का वर्गीकरण

| लिंग | ग्रामीण | शहरी | योग |
|---|---|---|---|
| पुरुष | 78 | 168 | 246 |
| स्त्री | 72 | 182 | 254 |
| योग | 150 | 350 | 500 |

प्राप्त आँकड़ों के आधार पर समस्त जनसंख्या को दो भागों में विभक्त किया गया है । ये दोनों भाग अध्यापकों की दो श्रेणियों को दर्शाते हैं । इन्हें नवाारिक और अनवाचारिक कहते हैं । इसको नीचे तालिका संख्या 4.3 में दर्शाया गया है ।

## सारिणी संख्या – 4.3

### विभिन्न स्तर पर नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों की संख्या

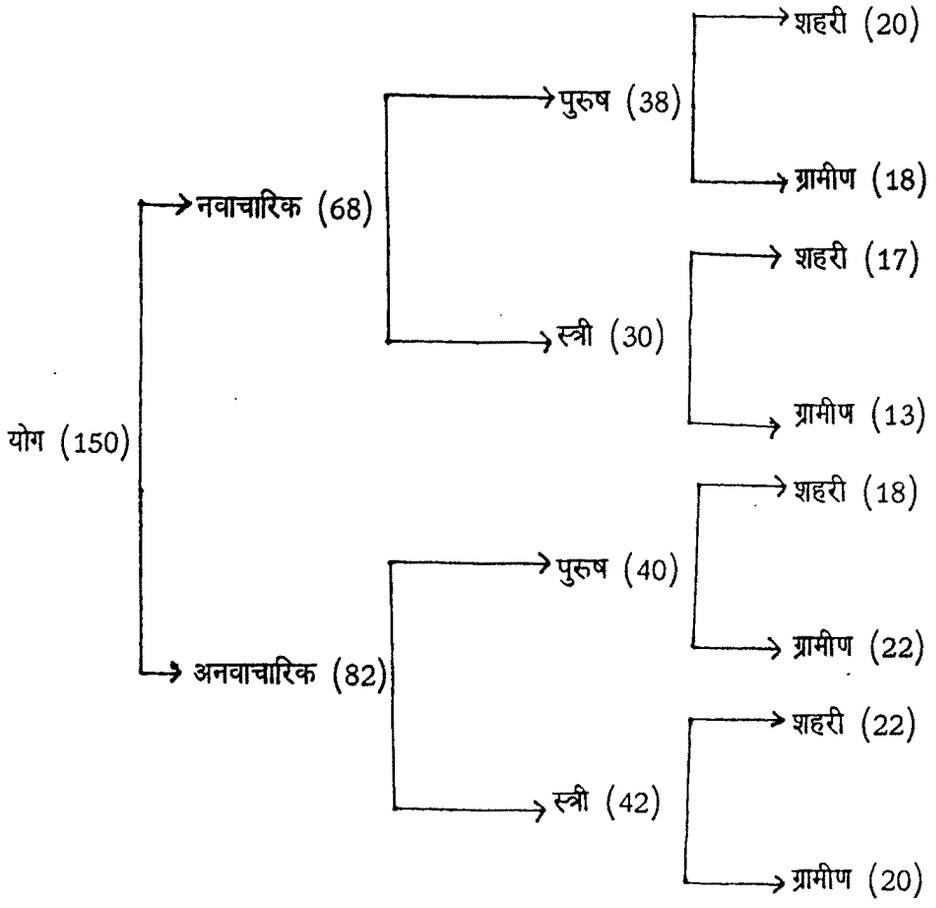


अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए नवाचारिक, अनवाचारिक अध्यापकों का विभाजन लिंग के आधार पर किया गया है, जिसको तालिका संख्या 4.4 में प्रस्तुत किया गया है ।

## तालिका संख्या – 4.4

नवाचारिक और अनवाचारिक सहायक अध्यापकों के माध्य, मानक विचलन एवं संख्या का विवरण

| | लिंग | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर |
|---|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक | पुरुष | 4.23 | 1.81 | 38 | .20 |
| | महिला | 4.14 | 1.80 | 30 | |
| अनवाचारिक | पुरुष | 4.25 | 1.87 | 40 | .41 |
| | महिला | 4.14 | 1.80 | 42 | |

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय के 40 महाविद्याय में 38 नवाचारिक अध्यापक पुरुष और 30 नवाचारिक महिला अध्यापिकाएँ हैं । नवाचारिक अध्यापकों का माध्य 4.23 एवं मानक विचलन 1.8 है । नवाचारिक महिला अध्यापकों का माध्य 4.13 और मानक विचलन 1.80 है, जबकि अनवाचारिक पुरुषों का मध्यमान 4.25 और मानक विचलन 1.87 है एवं अनवाचारिक महिला

अध्यापिकाओं का माध्य 4.14 तथा मानक विचलन 1.80 है । उपरोक्त तथ्यों से प्रस्तुत शोध–निबन्ध के प्रथम उद्देश्य की पूर्ति होती है और यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में 68 नवाचारिक एवं 82 अनवाचारिक अध्यापक हैं ।

उपरोक्त उद्देश्य के अन्तर्गत ही अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की नवाचारिक एवं अनवाचारिक में अन्तर देखने का भी प्रयास किया गया है, नवाचारिक पुरुष एवं महिला वर्ग का सी.आर. मान .20 पाया गया, जो कि सार्थक नहीं है । अनवाचारिक पुरुष एवं महिला वर्ग का सी.आर. मान .41 पाया गया ।

तालिका संख्या – 4.5

नवाचारिक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के माध्य, मानक विचलन में अन्तर देखने का प्रयास किया गया है

| | लिंग | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर. |
|---|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक | अध्यापक | 6.22 | 1.52 | 38 | 6.28 |
| | अध्यापिका | 4.21 | 2.33 | 30 | |

तालिका संख्या 4.5 में नवाचारिक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के नवाचारिक मापनी पर प्राप्तांकों के माध्यों के मध्य सार्थक अन्तर देखने के लिए सी.आर. के मान की गणना की गयी है । उपरोक्त तालिका में अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के नवाचारिता पर प्राप्त परिणामों के मध्य अन्तर की सार्थकता को देखा गया है । नवाचारिक अध्यापकों का माध्य 6.22 है और मानक विचलन 1.52 है, जबकि नवाचारिक अध्यापिकाओं का माध्य 4.21 है और मानक विचलन 2.33 है । इनके मध्य सी.आर. का मान 6.28 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता के किसी भी स्तर पर सार्थक अन्तर का प्रदर्शन नहीं करता है । अत: यह कहा जा सकता है कि नवाचारिक अध्यापक और अध्यापिकाओं के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है ।

अनवाचारिक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के नवाचारिकता मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों के माध्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता को देखने का प्रयास किया गया है । तालिका संख्या 4.6 में नवाचारिक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के माध्यों के मध्य सी.आर. का मान की गणना की गयी है ।

## तालिका संख्या – 4.6

अनवाचारिक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के माध्य, मानक विचलन तथा सी.आर. का विवरण

| | लिंग | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर.का मान |
|---|---|---|---|---|---|
| अनवाचारिक | अध्यापक | 7.54 | 1.83 | 40 | 5.30 |
| | अध्यापिका | 5.94 | 1.85 | 42 | |

अनवाचारिक अध्यापकों का माध्य 7.54 है और अनवाचारिक अध्यापिकाओं का माध्य 5.94 है, दोनों की संख्या क्रमशः 40 और 42 है तथा मानक विचलन क्रमशः 1.83 एवं 1.85 है । इनके मध्य प्राप्त सी.आर. मान 5.30 है जो कि दिये गये मान से कम है । अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अनवाचारिक अध्यापक एवं ध्यापिकाओं के माध्यों में सार्थक अन्तर नहीं है और दोनों की नवाचारिकता के सन्दर्भ में एक समान प्रवृत्ति है ।

**शुक्ला** (1985) के द्वारा प्राथमिक अध्यापकों की नवाचारिकता के सन्दर्भ में किये गये अध्ययन में भी इसी प्रकार के निष्कर्ष पाये गये हैं । इस अध्ययन में यह

पाया गया है कि प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की नवाचारिकता में लिंग के आधार पर किसी प्रकार का अन्तर नहीं था । मार्स्टन (1977) ने भी अपने अध्ययन के द्वारा यह निष्कर्ष निकाला था कि लिंग के आधार पर नवाचारिक अध्यापकों को नहीं पहचाना जा सकता है । वास्तव में नवाचारिकता का विकास समस्यात्मक वातावरण और अन्तःप्रेरक पर निर्भर करता है । इसके लिए ज्ञान के प्रति जिज्ञासा प्रयोग करने की क्षमता, जोखिम उठाने का साहस आदि अनेक गुणों की आवश्यकता पड़ती है, जो कि नवाचारिक व्यक्तियों में विकसित होती है । पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय में शिक्षण के क्षेत्र में अधिकांशतः पुरुष ही कार्यरत है, जो कि उच्च सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से आते हैं और महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में आने वाले अध्यापकों में से अधिकांश की सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्न–मध्य श्रेणी की होती है । अतः सामाजिक आर्थिक स्थिति के कारण दोनों की नवाचारिकता में एक समान प्रवृत्ति हो सकती है ।

प्रस्तुत शोध का दूसरा उद्देश्य नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों की महत्वाकांक्षा एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है । अध्यापकों के महत्वाकांक्षा के मापन के लिए आंसपरी का उपयोग किया गया है । आंसपरी पर दो प्रकार के प्राप्तांक, निष्कर्षों तक पहुंचने में सहायक होते हैं और उनके द्वारा ही महत्वाकांक्षा के स्तर का मूल्यांकन किया गया है । प्रथम "ग्रुप डिसक्रियेसिस स्कोर्स" या जी.डी.एस. और अटेन्मेन्ट डिसक्रियेन्सी स्कोर्स या ए.डी.एस./जी.डी.एस. व्यक्ति के विगत कार्य निष्पादन और उसके बाद तुरन्त बाद निर्धारित किये गय लक्ष्य के बारे में बतलाना है,

जिससे उनके महत्वाकांक्षा स्तर के बारे में पता लगता है और परिणामों पर आये बीजगणितीय चिह्न उपलब्धि के आधार पर महत्वाकांक्षा के निर्माण की दिशा और मात्रा का उद्‌बोधन करते हैं । ए.डी.एस. व्यक्ति द्वारा अनुमानित कार्य और उसके द्वारा वास्तविक कार्य के अन्तर को प्रदर्शित करता है । अगर ए.डी.एस. धनात्मक है तो इस बात का प्रयोग करता है कि व्यक्ति अपने उपलब्धि से अधिक की आकांक्षा करता है और उसे उच्च महत्वाकांक्षी कहा जा सकता है । यदि यह ऋणात्मक है तो उसे निम्न महत्वाकांक्षी कहा जाएगा ।

तालिका संख्या 4.7 में नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों के आंसपरी पर प्राप्त जी.डी.एस. के माध्यों क मध्य सार्थक अन्तर का देखा गया है ।

तालिका संख्या – 4.7

नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों के जी.डी.एस. का माध्य, मानक विचलन और सी.आर. का मान

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर. मान |
|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक | 7.20 | 2.27 | 68 | 2.60 |
| अनवाचारिक | 5.78 | 2.20 | 82 | |

नवाचारिक अध्यापकों का माध्य 7.20, मानक विचलन 2.27 है । अनवाचारिक अध्यापकों का माध्य 5.78 एवं मानक विचलन 2.20 है । दोनों माध्यों के मध्य प्राप्त सी.आर. का मान 2.60 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है । उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि नवाचारिक अध्यापकों का माध्य अनवाचारिक अध्यापकों से अधिक है । दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि नवाचारिक अध्यापकों का जी.डी.एस. अनवाचारिक अध्यापकों से अधिक है । माध्य का धनात्मक चिन्ह वह बतलाता है कि नवाचारिक और अनवाचारिक अध्यापक अपने विगत उपलब्धि के आधार पर अपने महत्वाकांक्षा के स्तर का उन्नयन करते हैं । किन्तु नवाचारिक अध्यापक अनवाचारिक अध्यापकों की तुलना में अपने महत्वाकांक्षा के स्तर को उपलब्धि तुलना में अधिक ऊपर उठाते हैं । यद्यपि की प्रतिमानों के आधार पर दोनों माध्यों का वर्ग असत् महत्वाकांक्षा का प्रदर्शन करता है । किन्तु नवाचारिक अध्यापक के महत्वाकांक्षा के स्तर अनवाचारिक अध्यापकों की तुलना में अधिक है । नवाचारिक अध्यापक अपनी उपलब्धि से अधिक महत्वाकांक्षा के स्तर को निर्धारित करते हैं और यह अनवाचारिक अध्यापकों की तुलना में अधिक हाती है । व्यक्ति जब कार्य में अपने आत्म को संलग्न करता है, तब वह प्रवृत्ति देखने को मिलती है । (हारवरी – 1951)

यह कहा जा सकता है कि नवाचारिक अध्यापक अनवाचारिक अध्यापक की तुलना में अपने कार्य में अधिक आत्म परिवेष्ठन रखते हैं (इगोइन्वाल्मेन्ट) रखते हैं ।

तालिका संख्या 4.8 में नवाचारिक और **अनवाचारिक अध्यापकों के** ए.डी.एस. के माध्यकों के मध्य सार्थक अन्तर देखा गया है । नवाचारिक तालिका संख्या 4.8 – नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों के ए.डी.एस. का माध्य, मानक विचलन और सी.आर. का मान ।

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर. का मान |
|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक | 5.60 | 1.85 | 68 | 2.97 |
| अनवाचारिक | 4.42 | 1.29 | 82 | |

.01 स्तर पर सार्थक

अध्यापकों के ए.टी.एस. का माध्य 5.60 है और मानक विचलन 1.85 है तथा अनवाचारिक अध्यापकों का माध्य 4.42 तथा मानक विचलन 1.29 है । इन दोनों माध्यों के मध्य अन्तर की सार्थकता को देखने के लिये सी.आर. की गणना की गई और सी.आर. का मान 2.97 प्राप्त हुआ, जो कि .01 स्तर पर सार्थक अन्तर का प्रदर्शन करता है । नवाचारिक अध्यापक का ए.डी.एस. धनात्मक है । जो कि इस बात का प्रदर्शन करता हैं कि वह अपने उपलब्धि से अधिक की आकांक्षा रखता है । वास्तव में ए.डी.एस. के माध्यम से व्यक्ति अपने औसत कार्य को लक्ष्यों के आधार पर नियंत्रित

करता है । **ब्रूवेन** (1965) ने अपने अध्ययनों में यह पाया था कि कुसमायोजित व्यक्ति अपने अनुमान को अपने कार्य निष्पादन के स्तर से नीचे रखता है, जबकि सामाजिक व्यक्ति अपने लक्ष्य को निष्पादन स्तर से थोड़ा सा ऊपर रखता है । इस दृष्टि से अगर देखा जाय तो नवाचारिक अध्यापक और अनवाचारिक अध्यापक दोनों संयमित महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं । किन्तु नवाचारिक अध्यापक अनवाचारिक अध्यापक की तुलना में अधिक महत्वाकांक्षी है ।

नवाचारिक पुरुष और अनवाचारिक पुरुष अध्यापकों के महत्वाकांक्षा स्तर का अध्ययन करने के लिए तालिका संख्या 4.9 में इन दोनों वर्गों के अध्यापकों के जी.डी.एस. के माध्यों में सार्थक अन्तर देखने के लिए सी.आर. की गणना की गई है । तालिका देखने से यह पता चलता है कि नवाचारिक पुरुष का माध्य 4.50 तथा मानक विचलन 1.67 है और अनवाचारिक पुरुष का माध्य 4.34 तथा मानक विचलन 1.56 है । इसके मध्य सी.आर. का मान .60 प्राप्त हुआ, जो .05 स्तर पर माध्यों के मध्य सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करता है । अतः यह कहा जा सकता है कि अध्यापक का जी.डी.एस. अनवाचारिक अध्यापक से अधिक है और इनका महत्वाकांक्षा का स्तर अनवाचारिक अध्यापकों से अधिक होता है । यद्यपि दोनों माध्य प्रतिमानों के वर्गों के आधार पर संयमित महत्वाकांक्षा के वर्ग में भी आते हैं किन्तु नवाचारिक महत्वाकांक्षा का स्तर अनवाचारिक अध्यापकों से अधिक है ।

तालिका संख्या – 4.9

नवाचारिक और अनवाचारिक पुरुष अध्यापकों के जी.डी.एस. का माध्य, मानक विचलन और सी.आर. का मान

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर. का मान |
|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक पुरुष | 4.50 | 1.67 | 38 | .60 |
| अनवाचारिक पुरुष | 4.34 | 1.56 | 40 | |

× .05 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 4.10 में नवाचारिक और अनवाचारिक अध्यापकों के ए.डी.एस. के माध्यों की तुलना की गयी है ।

तालिका संख्या – 4..10

नवाचारिक और अनवाचारिक पुरुष अध्यापकों के ए.डी.एस. का माध्य, मानक विचलन और सी.आर. का मान

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर. का मान |
|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक पुरुष | 6.82 | 1.79 | 38 | 7.59 |
| अनवाचारिक पुरुष | 4.64 | 1.70 | 40 | |

× .01 स्तर पर सार्थक

नवाचारिक अध्यापकों का माध्य 6.82 तथा मानक विचलन 1.79 है । अनवाचारिक अध्यापकों का माध्य 4.64 और मानक विचलन 1.70 है, माध्यों के आधार पर सी.आर. के मान की गणना की गयी तो सी.आर. का मान 7.59 प्राप्त हुआ जो कि .01 स्तर पर सार्थक अन्तर का प्रदर्शन करता है । अतः यह कहा जा सकता है कि नवाचारिक पुरुष अध्यापक अनवाचारिक पुरुष की तुलना में अधिक महत्वाकांक्षी हैं । वास्तव में शोधों के द्वारा यह देखा गया कि नवाचारिक अध्यापक में साहस और उत्तेजना अधिक मात्रा में होती है । (शुक्ला – 1985) अतः वे अपने आगामी लक्ष्यों के स्तरों को उन्नयन कर सकते हैं, जबकि अनवाचारिक अध्यापक कम बुद्धि वाले और सुस्तमान होते हैं । अतः इस बात की सम्भावना हो सकती है कि वे अपने आकांक्षा के स्तर को उपलब्ध की तुलना में कम ऊँचा उठाते हैं ।

प्रस्तुत शोध का तीसरा उद्देश्य नवाचारिक अध्यापकों और अनवाचारिक अध्यापिकाओं की महत्वाकांक्षा एवं सृजनात्मकता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना था । तालिका संख्या 4.11 में अध्यापिकाओं के उपरोक्त दो वर्गों के जी.डी.एस. के माध्यों का सार्थक अन्तर देखा गया है ।

तालिका संख्या – 4.11

नवाचारिक और अनवाचारिक अध्यापिकाओं के जी.डी.एस. का माध्य, मानक विचलन और सी.आर. का मान

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर. का मान |
|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक महिला | 5.53 | 1.69 | 30 | 2.62 |
| अनवाचारिक महिला | 4.37 | 1.92 | 42 | |

× .01 स्तर पर सार्थक

नवाचारिक अध्यापिकाओं का माध्य 5.53 है तथा मानक विचलन 1.69 है और अनवाचारिक अध्यापिकाओं का माध्य 4.37 तथा मानक विचलन 1.92 है । उनके मध्य सी.आर. की गणना करने पर सी.आर. का मान 2.62 प्राप्त हुआ, जो कि .01 स्तर पर सार्थक अन्तर का प्रदर्शन करता है । अतः यह कहा जा सकता है कि नवाचारिक अध्यापिकाओं का जी.डी.एस. अनवाचारिक अध्यापिकाओं से अधिक है ।

तालिका संख्या – 4.12

अनवाचारिक नवाचारिक सृजनात्मकता परीक्षण के द्वारा सी.आर. मान, मध्यमान और मानक विचलन की गणना

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर. मान |
|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक | 21.00 | 11.32 | 220 | 7.55 |
| अनवाचारिक | 15.18 | 6.30 | 280 | |

सारिणी संख्या 4.12 को देखने से यह ज्ञात हुआ कि सृजनात्मकता परीक्षण में नवाचारिक और अनवाचारिक अध्यापकों का सी.आर. मान 7.55 पाया गया, जो कि .01 के विश्वास के स्तर पर सार्थक है । जो यह प्रदर्शित करता है कि नवाचारिक अध्यापक अनवाचारिक सृजनात्मक परीक्षण में उच्च अंक प्राप्त करते हैं, जबकि अनवाचारिक अध्यापक किसी परीक्षण में कम अंक प्राप्त करते हैं ।

## तालिका संख्या – 4.13

| | मौलिक | | | वास्तविक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | माध्य | मानकविचलन | संख्या | माध्य | मानकविचलन | संख्या |
| नवाचारिक | 12.44 | 5.35 | 220 | 9.78 | 6.46 | 220 |
| अनवाचारिक | 10.64 | 5.42 | 280 | 7.64 | 4.58 | 280 |
| सी.आर. मान | | 4.08 | | | 4.58 | |

तालिका संख्या 4.13 को दखने से यह पता चलता है कि मौलिक वर्ग के अनवाचारिक व नवाचारिक का सी.आर. मान 4.09 पाया गया, जो कि .01 स्तर पर सार्थक है । इसके विपरीत वास्तविक वर्ग का सी.आर. मान 4.58 पाया गया, यह भी .01 स्तर पर सार्थक है ।

तालिका संख्या – 4.14

| | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर. मान |
|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक महिला | 5.51 | 1.85 | 30 | 1.89 |
| अनवाचारिक महिला | 4.49 | 1.74 | 42 | |

.05 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 4.14 में नवाचारिक और अनवाचारिक अध्यापिकाओं के ए.डी.एस. के माध्यों के मध्य सी.आर. की गणना की गयी है । उपरोक्त तालिका में नवाचारिक अध्यापिकाओं के ए.डी.एस. का माध्य 5.51 है तथा मानक विचलन 1.85 है । अनवाचारिक अध्यापिकाओं का माध्य 4.95 है तथा मानक विचलन 1.74 है, दोनों माध्यों के आधार पर ही सी.आर. का मान 1.89 प्राप्त हुआ, जो कि .05 स्तर पर सार्थक अन्तर का प्रदर्शन करता है ।

जी.डी.एस. के सार्थक अन्तर के आधार पर कहा जा सकता है कि नवाचारिक अध्यापिकायें अनवाचारिक अध्यापिकाओं की तुलना में अपनी विगत उपलब्धि से अधिक की आकांक्षा रखती हैं और उनकी महत्वाकांक्षा का स्तर अनवाचारिक अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक होती है । फ्रेंच – 1971 ने अपने एक अध्ययन में यह पाया था कि नवाचारिक अध्यापकों में अनवाचारिक अध्यापकों की तुलना में व्यवसाय से सम्बन्धित अभिप्रेरणा अधिक मात्रा में होती है । इस अध्ययन से भी इसी तथ्य की पुष्टि होती है कि नवाचारिक अध्यापिकाओं में अपने कार्य के प्रति अधिक महत्वाकांक्षा होती है ।

नवाचारिक अध्यापिकाओं और अनवाचारिक अध्यापिकाओं के ए.डी.एस. की भिन्नता के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नवाचारिक अध्यापिकायें अधिक महत्वाकांक्षी होती हैं । लायन वर्गर – 1953 में नवाचारिक व्यक्तियों को "जनमत नेता" माना है और हेमिल्टन, हेमवल्ट और मारिस ने अपने अध्ययन में यह पाया था कि नेताओं में महत्वाकांक्षा का स्तर अधिक मात्रा में पाया जाता है । इस अध्ययन में भी कुछ इसी प्रकार का परिणाम प्राप्त होता है ।

नवाचारिक अध्यापिकायें जो कि जनमत नेता का भी कार्य करती है, वे अपनी आकांक्षा के स्तर को तो अधिक रखती है, साथ ही उसके आधार पर उनके द्वारा किये गये कार्यों की मात्रा भी अधिक होती है ।

प्रस्तुत शोध के चौथे और पाँचवें उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नवाचारिक और अनवाचारिक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की महत्वाकांक्षा के स्तर एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । तालिका संख्या 4.15 मे नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के जी.डी.एस. के माध्यों के मध्य सार्थक अन्तर देखने के लिए सी.आर. मान की गणना की गई है । निम्न तालिका में नवाचारिक अध्यापकों का माध्य 5.17 है और नवाचारिक अध्यापिकाओं का माध्य 4.09 है । इन दोनों के मध्य प्राप्त सी.आर. का मान 2.71 है, जो कि किसी भी स्तर पर सार्थक अन्तर का प्रदर्शन नहीं करता है । अतः यह कहा जा सकता है कि नवाचारिक अध्यापक एवं नवाचारिक अध्यापिकाओं के माध्यों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है । किन्तु अनवाचारिक अध्यापक एवं अनवाचारिक अध्यापिकाओं के माध्यों के मध्य सी.आर. का मान 5.05 प्राप्त हुआ है, जो कि .05 स्तर पर सार्थक अन्तर का प्रदर्शन करता है । अतः यह कहा जा सकता है कि नवाचारिक अध्यापक (माध्य = 4.64) अनवाचारिक अध्यापिकाओं (माध्य = 2.13) से अधिक महत्वाकांक्षा रखते हैं ।

तालिका संख्या 4.15

| | लिंग | माध्य | मानक विचलन | संख्या | सी.आर. मान |
|---|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक | पुरुष | 5.17 | 2.50 | 38 | 2.71 |
| | महिला | 4.09 | 2.33 | 30 | |
| अनवाचारिक | पुरुष | 4.64 | 1.70 | 40 | 5.05 |
| | महिला | 2.13 | 1.01 | 42 | |

असार्थक

× .05 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 4.16 में नवाचारिक एवं अवाचारिक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के ए.डी.एस. के माध्य सी.आर. के मान की गणना की गयी है । नवाचारिक अध्यापकों का माध्य 4.94 है तथा मानक विचलन 2.37 है और नवाचारिक अध्यापिकाओं का माध्य 3.29 है तथा मानक विचलन 1.97 है, इन दोनों के मध्य प्राप्त सी.आर. का मान 1.42 है, जो कि .05 स्तर पर सार्थक अन्तर का प्रदर्शन करता है ।

तालिका संख्या – 4.16

| | लिंग | माध्य | मानकविचलन | संख्या | सी.आर.मान |
|---|---|---|---|---|---|
| नवाचारिक | पुरुष | 4.94 | 2.37 | 38 | 1.42 |
| | महिला | 3.29 | 3.29 | 30 | |
| अनवाचारिक | पुरुष | 5.43 | 1.74 | 40 | .88 |
| | महिला | 4.85 | 1.21 | 42 | |

×× .05 पर सार्थक

× असार्थक

इस आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नवाचारिक अध्यापक, अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक महत्वाकांक्षी हैं । इस तालिका में अनवाचारिक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर देखने का प्रयास किया गया । अनवाचारिक अध्यापकों का माध्य 5.43 है और मानक विचलन 1.74 है, जबकि अनवाचारिक अध्यापिकाओं के ए.डी.एस. का माध्य 4.85 है और मानक विचलन 4.85 है और मानक विचलन 1.21 है । इन माध्यों की तुलना करने पर सी.आर. का मान .88

प्राप्त हुआ जो कि दोनों माध्यों के मध्य असार्थक अन्तर का प्रदर्शन करता है । अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापिकाओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

********